International Journal of Information Technology and Management
Vol. XI, Issue No. XVII, November-2016, ISSN 2249-4510

नयी आर्थिक नीति का कृषि विकास के ऋणात्मक, व्यापार तथा आधुनिकीकरण पर प्रभाव

Yudhvir Singh[1]* Arun Kumar[2] Babita Rani Tyagi[3]

[1,2] Department of Economics, Meerut College, Meerut

[3] Dewan Institute of Management Studies, Meerut

सारांश – ***भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ, तत्कालीन स्थिति में देश खाद्यान एवं उपभोक्ता वस्तुओं के अभाव से गुजर रहा था। देश में औद्योगिक इकाईयों की मात्रा सीमित होने से औद्योगिक उत्पादन अत्यन्त न्यून बना हुआ है तथा देश में सामाजिक सुविधायें भी केवल नाम मात्र की थी। देश की अर्थव्यवथा का मूल आधार कृषि था। अप्रैल 1951 से भारत सरकार ने आर्थिक नियोजन को प्राथमिकता देते हुये पंचवर्षीय योजनाओं का श्री गणेश किया। इन योजनाओं के माध्यम से सरकार द्वारा औद्योगिक स्थापना के लिये आवश्यक संरचना का विकास राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओ से ऋण व सहायता प्राप्त की गई। विदेशी पूँजी भी आमंत्रित की गयी। इस प्रकार देश में सार्वजनिक उद्योगों का विकास किया गया। उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन व वितरण पर प्रतिवन्ध लगाये गये। कृषि उत्पादन को बआर्थिक नीति (Economic Policy) से आशय उन सरकारी नीतियों से होता है जिनके द्वारा किसी देश के आर्थिक क्रियाकलापों का नियमन होता है। आर्थिक नीति के अन्तर्गत करों के स्तर निर्धारित करना, सरकार का बजट, मुद्रा की आपूर्ति, ब्याज दर के साथ-साथ श्रम-बाजार, राष्ट्रीय स्वामित्व, तथा अर्थव्यवस्था में सरकार के हस्तक्षेप के अनेकानेक क्षेत्र आते हैं। इस शोध अध्ययन का उद्धेष्य यह भी है कि आर्थिक उदारीकरण की नीति का कृषि विपणन में उसकी भूमिका का अध्ययन किया जाये।***

----------X----------

1. प्रस्तावना

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे आर्थिक परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुये भारत ने भी सन् 1991 में आर्थिक विकास की नीति में परिवर्तन का संकल्प लिया और इस नीति को उदारीकरण तथा खुलेपन की नीति का नाम दिया गया। जिससे देश में आर्थिक परिवर्तन कर आर्थिक नीति में सुधार किया जा सके। सर्वप्रथम 1991 के दशक में पी.वी. नरसिम्हा राव के नेतृत्व में भारत में केन्द्र सरकार का गठन हुआ। इस सरकार के आने के साथ ही नवीन आर्थिक नीति में औद्योगिक, व्यापारिक, वित्तीय एवं मौद्रिक इत्यादि क्षेत्रों में उदारीकरण का प्रसार किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने, भारतीय अर्थव्यवस्था को विष्व अर्थव्यवस्था से जोड़ने, और देश की अर्थव्यवस्था को निजीकरण की ओर दिषा देने में अनेक महात्वपूर्ण कदम उठाये गये। भारत में जुलाई 1991 में आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किये गये तथा इसके लिये भारत सरकार ने जो रणनीति स्वीकार की उसे नवीन आर्थिक नीति कहा जाता है। इस नीति का मूलभूत उद्देश्य उदारीकरण की नीति को अपनाकर निजीकरण को प्रोत्साहित करना, तथा देश की अर्थव्यवस्था का भूमण्डलीकरण के लिये मार्ग खोलना था इस नीति के अन्तर्गत विभिन्न नीतिगत उपायों और परिवर्ततनों को अपना कर जिनका उद्धेष्य अर्थव्यवस्था में प्रतियोगी वातावरण तैयार करके उत्पादकता और कुशलता में बृद्धि करना है। साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़कर अधिक प्रतियोगी बनाने का एक प्रमुख प्रयास है अर्थात भारत सरकार द्वारा प्रमुख रूप से भारतीय अर्थव्यस्था को भूमण्डलीय व्यवस्था से जोड़ना है। इसीलिए आर्थिक सुधारो के अन्तर्गत निर्यातो में वृद्धि के लिये विनिमय दरों में तालमेल, आयात शुल्क में कमी, विदेशी उच्च तकीनीकि तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिये खुली एवं उदार नीति अपनाना सम्मिलित है। विश्व व्यापार से जोड़नें के लिये तथा अधिकांश देशों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिये अपेक्षाकृत उदार आर्थिक सम्बन्ध बनाये जाते है, जिससे प्रतियोगी विकास के साथ उच्च दक्षता वाली उत्पादकता को

www.ignited.in

बढ़ावा देना, तकनीकि हस्तान्तरण शोध एवं विकास के कार्यक्रमों में आपसी सहयोग का लाभ उठाना, तथा उन उपायों को बढ़ावा देना सम्मिलित है, जिससे देश बन्द अर्थव्यवस्था की बुराईयों से मुक्त हो सकें। हमारे लिए कृषि सकंट प्राकृतिक संसाधनों के दाहे न और उसके चलते बड़े पैमाने पर होने वाले पारिस्थितिक खतरे के कारण भी उल्लेखनीय है। यह छोटे किसानों भूमिहीन मजदूरों व कामगार वर्ग के लोगोंको संतुलित एवं सुरक्षित आहार से वंचित रखने में भी प्रदर्शित होता है।

2. नयी आर्थिक नीति

1990 के दशक में भारत सरकार ने आर्थिक संकट से बाहर आने के क्रम में अपने पिछले आर्थिक नीतियों से विचलित और निजीकरण की दिशा में सीखने का फैसला किया और अपनी नई आर्थिक नीतियों को एक के बाद एक घोषित करना शुरू कर दिया। आगे चलकर इन नीतियों के अच्छे परिणाम देखने को मिले और भारत के आर्थिक इतिहास में ये नीतियाँ मील के पत्थर सिद्ध हुईं। उस समय पी वी नरसिंह राव भारत के प्रधानमंत्री थे और मनमोहन सिंह वित्तमंत्री थे।

इससे पहले देश एक गंभीर आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था और इसी संकट ने भारत के नीति निर्माताओं को नयी आर्थिक नीति को लागू के लिए मजबूर कर दिया था। संकट से उत्पन्न हुई स्थिति ने सरकार को मूल्य स्थिरीकरण और संरचनात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से नीतियों का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया। स्थिरीकरण की नीतियों का उद्देश्य कमजोरियों को ठीक करना था।

जिससे राजकोषीय घाटा और विपरीत भुगतान संतुलन को ठीक किया जा सके।

नयी आर्थिक नीति

नई आर्थिक नीति के ३ प्रमुख घटक या तत्व थे- उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण।

► **नई आर्थिक नीति के मुख्य उद्देश्य**

वित्त मंत्री डॉ मनमोहन सिंह द्वारा नई आर्थिक नीति आरम्भ करने के पीछे मुख्य उद्देश्य थे, वे निम्नलिखित हैं1,-

- भारतीय अर्थव्यवस्था को 'वैश्वीकरण' के मैदान में उतारने के साथ-साथ इसे बाजार के रूख के अनुरूप बनाना।
- मुद्रास्फीति की दर को नीचे लाना और भुगतान असंतुलन को दूर करना।
- आर्थिक विकास दर को बढ़ाना और विदेशी मुद्रा के पर्याप्त भंडार का निर्माण करना।
- आर्थिक स्थिरीकरण को प्राप्त करने के साथ-साथ सभी प्रकार के अनावश्यक आर्थिक प्रतिबंधों को हटाना। अर्थव्यवस्था के लिए बाजार अनुरूप एक आर्थिक परिवर्तिन लाना।
- प्रतिबंधों को हटाकर, माल, सेवाओं, पूंजी, मानव संसाधन और प्रौद्योगिकी के अन्तरराष्ट्रीय प्रवाह की अनुमति प्रदान करना।
- अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में निजी कंपनियों की भागीदारी बढ़ाना। इसी कारण सरकार के लिए आरक्षित क्षेत्रों की संख्या घटाकर 3 कर दिया गया।

सन 1990 के आर्थिक संकट का सामना करने के लिए भारत सरकार ने कई आर्थिक सुधर कार्यक्रम आरम्भ किए जिसे नई आर्थिक नीति के नाम से जाना जाता है नई स्थिक नीति के तीन विस्तृत घटक निम्न प्रकार है:

1. उदारीकरण
2. निजीकरण

आर्थिक उदारीकरण की नीति से आशय "उद्योग तथा व्यापार को अनावश्यक प्रतिबन्धों से मुक्त करके अधिक प्रतियोगी बनाना है।" भारत सरकार द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाने से भारतीय अर्थव्यवस्था जो नियमों, प्रतिबन्धों एवं लाइसेंस राज की जटिलता से ग्रसित थी अब बहुत कुछ सीमा तक खुलकर सांसे ले रही है। यही कारण है कि भूमण्डलीय एवं आर्थिक उदारीकरण का देश की अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। लेकिन जहाँ तक कृषि का प्रश्न है, तो यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि आर्थिक उदारीकरण की नीतियों से कृषि क्षेत्र की सामान्यतः अपेक्षा हो गयी। फिर भी

www.ignited.in

आर्थिक उदारीकरण की नीतियों को अपनाना सरकार की तात्कालिक आवश्यकता थी।

उदारीकरण की मुख्य नीतियाँ निम्न प्रकार है:-

- नई औद्योगिक नीति
- नई व्यापार नीति
- नई राजकोषीय नीति
- नई मौद्रिक नीति

इस प्रकार सरकार द्वारा उदारीकरण की नीतियों को अपनाकर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ बनाना था। क्योकि इसके पीछे उदारीकरण की नीति के मूल उद्देष्य निम्नालिखित थे -

- घरेलू उत्पादन प्रणाली में सुधार तथा उत्पादन क्षमता में विकास
- रोजगार के अवसरों में बृद्धि
- वस्तुओं तथा सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में सम्मिलित होना।

इस प्रकार सरकार उदारीकरण की नीति अपनाकर भारतीय अर्थव्यवस्था को विष्व अर्थव्यवस्था से जोड़ने और देश की अर्थव्यवस्था को निजीकरण की आर मोड़ने के लिये विशेष रूप से प्रयत्नशील थी और इस नीति के अन्तर्गत सरकार ने नई आर्थिक नीति के अन्तर्गत उदारीकरण के क्रम में प्रमुख रूप से निम्न नीतिगत उपाय अपनाये जो इस प्रकार है -

√ नियन्त्रित व्यवस्था के स्थान पर उदारीकरण की नीति

√ विदेशी निवेश को प्रोत्साहन

√ उत्पादन की उन्नत तकनीकि को अपनाना

√ कृषि के आधुनिकीकरण को प्रोत्साहन

आर्थिक नीति का सम्बन्ध आर्थिक मामलों से सम्बन्धित कुछ निर्धारित परिणामों की प्राप्ति हेतु अपनाई गई कार्यविधि से होता है। आर्थिक नीति एक व्यापक नीति है और इसमें अनेक नीतियों का समावेश किया जाता है।

सामाजिक विज्ञान के विश्वकोष के अनुसार, ‘‘आर्थिक नीति शब्द का प्रयोग आर्थिक क्षेत्र में सरकार की उन सभी क्रियाओं में सम्मिलित किया जा सकता है, जिनका सम्बन्ध उत्पादन, वितरण एवं उपयोग में जानबूझकर अथवा अधिक सरकारी हस्तक्षेप से होता है।’’ इस प्रकार आर्थिक नीति किसी सरकार का वह आर्थिक दर्शन और व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत विभिन्न नीतियाँ, जैसे - कृषि नीति, औद्योगिक नीति, वाणिज्य नीति, राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति, नियोजन नीति, आय नीति, रोजगार नीति, परिवहन नीति एवं जनसंख्या नीति आदि सम्मिलित हैं, में समन्वय कर निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वह कदम उठाती है।

औपनिवेशिक शासकों द्वारा रची गई आर्थिक नीतियों का ध्येय भारत का आर्थिक विकास नहीं बल्कि अपने मूल देश वेफ आर्थिक हितों का संरक्षण और संवर्धन ही था। इन नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था वेफ स्वरूप वेफ मूल रूप को बदल डाला। भारत, इंग्लैंड को कच्चे माल की पूर्ति करने तथा वहाँ वेफ बने तैयार माल का आयात करने वाला देश बन कर रह गया।

भारत सरकार को इस नवीन आर्थिक नीति का मूल उद्धेश्य उदारीकरण की नीति अपनाकर निजीकरण को प्रोत्साहित करना एवं देश की अर्थव्यवस्था के लिए भूमण्डलीकरण के मार्ग को खोलना है जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था तथा विश्व बाजार से जोड़ कर उसे अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने का प्रयास था अर्थात भारतीय अर्थव्यवस्था का भूमण्डलीकरण करना एवं आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लागू करने हेतु उदारीकरण एक यंत्र के रूप में उपयोग किया गया है जिससे देश में आर्थिक सुधारों के साथ-साथ लोगों के जीवन में स्थिरता एवं गुणवत्ता में सुधार किया जा सके।

भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है। इस अर्थव्यवस्था के कारण सार्वजनिक क्षेत्र का धीरे-धीरे विकास होता गया तथा निजी क्षेत्र में विभिन्न प्रतिबन्धों एवं लाइसेंस प्रणाली के कारण देश की अर्थव्यवस्था में पूँजीपतियों को विकास के पर्याप्त अवसर अपलब्ध न हो सके। देश की आर्थिक शक्ति कुछ हाथो में ही केन्द्रित रही और इसका प्रभाव मात्र औद्योगिक क्षेत्र में ही दृष्टिगोचर होता रहा। लेकिन आर्थिक सुधारों की नीति के अन्तर्गत जब उदारीकरण की नीति को अपनाया गया तो इससे कृषि क्षेत्र भी प्रभावित हुआ। भारत में आर्थिक उदारीकरण के फलस्वरूप जिन तत्वों को प्राथमिकता की गयी, वे इस प्रकार हैं-

- लधु, मध्यम एवं बड़ी परियाजनाओं के माध्यम से सिंचाई सुविधओं का विस्तार तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण।
- नियमित मण्डियों के गठन के द्वारा कृषि विपणन व्यवस्था में सुधार लाना।
- कृषि उत्पाद को इकट्ठा करने के लिये गोदामों व भण्डारण व्यवस्था का उपयुक्त विस्तार करना। कृषि श्रमिकों की आर्थिक मजदूरी में सुधार हेतु न्यूनतम वेतन को लागू करना, बन्धुआ मजदूर प्रथा को समाप्त करना तथा भूमिहीन श्रमिकों को भूमि के पट्टे देना।
- कृषि क्षेत्र में नई किस्म के बीजों के अविष्कार के लिये, भूमि की उत्पादकता में वृद्धि के लिए कीटनाशक दवाओ के आविष्कार के लिये, तथा कृषि आगंतों व संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग के लिये कृषि अनुसंधान एवं प्रषिक्षण को प्रोत्साहित करना।
- देश में शुष्क क्षेत्रों में हरित क्रांति की दृष्टि से "जल सम्बर्द्धन विकास कार्यक्रम" एवं "10 लाख कुओं की योजना" का क्रियान्वयन।
- दलहन एवं तिलहन में वृद्धि के लियें प्रारम्भ की गयी योजनाओं को समन्वित कर "तिलहन उत्पादन कार्यक्रम" का क्रियान्वयन।

इस प्रकार आर्थिक उदारीकरण के अन्तर्गत मूलतः कृषि क्षेत्र को विकसित करने का भरसक प्रयास किया गया तथा उदारीकरण के द्वारा न केवल कृषि उत्पादकता में वृद्धि का प्रयास किया गया, अपितु इसके माध्यम से कृषि क्षेत्र से जुड़े लोगों को भी कुछ हद तक लाभान्वित करने का प्रस्ताव रखा गया। इस तरह स्पष्ट है, कि आर्थिक उदारीकरण पूर्णतः एक अर्थव्यवस्था कही जा सकती है। जिसमें अनेक प्रतिबन्धों को समाप्त कर उदारतापूर्व क कृषि को विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

आर्थिक उदारीकरण की नीति के फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में नियमों एवं प्रतिबन्धों में उदारता बरती गयी। जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था के कुछ भागों पर तो उदारीकरण का अनुकूलतम प्रभाव पड़ा लेकिन कृषि क्षेत्र पूर्णतः उपेक्षित रहा और यही कारण है कि 1990-91 से लगभग 2009-10 तक कृषि विकास की दर में एक तरह से स्थिरता की स्थिति विद्यमान रही। उदारीकरण की नीति के परिणामस्वरूप अन्य क्षेत्रों में भी कोई उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त नहीं हुई, जैसे कि कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र की वृद्धि दर में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता है। इसीलिए खाद्य उत्पादन की दर में भी उक्त अवधि में उतार- चढ़ावे की स्थिति बनी रही। देश के कृषि वस्तुओं के विदेशी व्यापार पर भी उदारीकरण की नीति की भूमिका नगण्य रही है, क्योकि कृषि व्यापार में भारत की भूमिका विश्व अर्थव्यवस्था में न्यूनतम है। हाँ यह अवश्य है कि देश के कृषि निर्यातों में भारतीय कृषि उत्पादों के निर्यात् में कुछ वृद्धि हुई, लेकिन उसका मूल कारण उदारीकरण की नीति नहीं थी अपितु वर्ष 1991 में किये गये रूपये के अवमूल्यन का प्रभाव था।

3. "नई आर्थिक नीति" और भारतीय कृषि पर इसके प्रभाव

वर्तमान कृषि सकंट की ठीक-ठाक समझ हासिल करने के लिए हमारा विश्लेषण केवल कृषि क्षेत्र तक सीमित (Restricted) नहीं होना चाहिए क्योंकि सम्पूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था के सदंर्भ में खासकर 1991 में सरकार द्वारा पोषित 'नई आर्थिक नीति' के तहत इसकी वर्तमान स्थिति की ज्यादा सटीक व व्यापक समझ बनाई जा सकती है।

नीति में यह 'नई' तबदीली कोइे नई चीज नहीं थी बल्कि यह उस आर्थिक दशर्न को प्रभावकारी ढगं से लागू करना था जिसे नव उदारवाद व भमूडंलीकरण के नाम से प्रस्तुत किया गया था। ये सब साम्राज्यवादी परियाजेनायें हैं जो कि 'विकसित देशों की एकाधिकारी पूँजी के हितों के लिए मुस्तैद हैं और जिसका विकासशील देशों की बड़ी पूँजी के साथ मजबूत सश्रंय है (इनके बीच परस्पर निर्भरता के रिश्ते प्रमुख हैं जिनमें कभी कभार टकराहट भी होती है)। इस उदारवादी युग को आधारभूत क्षेत्र में राज्य व्यय, सब्सिडी तथा दूसरे विकास कार्यों में गिरावट, बड़े पैमाने पर सावर्जनिक क्षेत्र के निजीकरण, भारतीय बाजार विदेशी पूँजी के लिए खुलने के साथ बाजार की शक्तियों के खुले खले (Free Play), निर्यात के लिए उत्पादन पर जोर, मजदूरों के अधिकारों पर भीषण हमले तथा ऐसी ही अन्य नीतियों के रूप में पहचाना जा सकता है। ये सब भारतीय कृषि को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। प्रत्यक्षतः सब्सिडियों, उर्वरकों और ऊर्जा (Power) (जो कि विकसित देशों की तुलना में पहले ही बहुत कम थी) पर व्यवस्थित हमला, किसानों के सामथ्र्य के अनुरूप बकैं ऋण पर हमला, सार्वजनिक खरीद एवं विपणन निकायों पर हमला, सिंचाई व अन्य आधारभूत सुविधाओं एवं मूलभूत वनस्पति शोध के प्रति गहराती उपेक्षा- इन सबने कृषि सकंट को अधिक गंभीर बनाने में यागेदान दिया है। इन सबके अतिरिक्त विभिन्न घरलू व विदेशी पूँजी द्वारा उधोग या विशेष आर्थिक क्षेत्र (जो कि अधिकांश मामलों में वास्तविक तौर पर कुछ नहीं बल्कि रियल स्टटे की सट्टबेाजी को निरूपित करते हैं) खालेने हेतु सरकार के प्रत्यक्ष तथा परोक्ष

www.ignited.in

सहयागे से किसानों की जमीन का स्वैच्छिक अथवा बलपूर्वक अधिग्रहण भी कृषि सकंट गहराने का एक कारण है।

वार्षिक विकास दरें

काल	खाद्यान्न	सभी कृषि
1950–51 से 64–65 तक	3.0	3.3
1965–66 से 74–75 तक	3.4	3.2
1975–76 से 84–85 तक	2.5	2.6
1985–86 से 94–95 तक	3.1	4.1
1994–95 से 04–05 तक	0.7	0.6

'नव उदारीकरण' के अप्रत्यक्ष प्रभावों ने भी अप्रत्यक्ष रूप से इस सकंट को बढ़ाने में महत्वपूर्ण यागेदान दिया है। सरकार द्वारा लागू वृहद् आर्थिक नीतियाँ (Macro-economic policies) नेत्वरित गति से भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र से तृतीयक (Tertiary) क्षेत्र की तरफ तबदीली तथा अनौपचारिकरण के मार्ग पर ले गई जिसके फलस्वरूप ग्रामीण राजेगार में वृद्धि में तीखी गिरावट, उद्यागे व कृषि में औपचारिक क्षेत्र के हिस्से के लगातार सिकुड़ते जाने के साथ शहरी श्रम शक्ति के बीच निम्न आय वाले अनौपचारिक "मिथ्या राजेागर" को बढ़ावा मिला। इन सबने क्रय शक्ति की गिरावट में योगदान दिया और भारतीय कृषि के राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय बाजार के साथ एकीकरण (Integration) (कई राज्यों में कार्पोरटे फार्मिगं के प्रवेश सहित) ने भारतीय कृषि को बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक नाजकु (Vulnerable) बनाया जिसने फसलों के वैश्विक स्तर पर गिरती कीमतों की पृष्ठभूमि (Backdrop) में हजारों छोटे व मध्यम किसानों के जीवन को तबाह कर दिया। दूसरी तरफ निर्यात के लिए उत्पादन पर जोर आंतरिक खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा बन कर उपस्थित हुआ है। आबादी के एक हिस्से के भारी संख्या में अत्यन्त गम्भीर कुपोषण का शिकार हाने के बावजदू खाद्यानों का निर्यात बड़ी सीमा तक लगातार बढ़ाया जाता रहा है। 2002 के मानसनू से शुरु होने वाले गंभीर सूखे के दौरान नवम्बर 2003 में सरकार द्वारा 1 करोड़ 70 लाख टन खाद्यान्न का निर्यात किया गया बावजदू इस तथ्य केकि विगत वर्ष जनू 2002 से नवम्बर 2003 के बीच खाद्यान्न उत्पादन में 3 करोड़ टन की कमी आयी थी। उस देश में जहाँ विभिन्न इलाके लगातार स्थायी रूप से अर्ध अकाल के खतरे में रहते हैं, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को व्यवहारतः खत्म कर दिया गया है।

4. नीतियों का ऋणात्मक प्रभाव

क्रषि की अवहेलना: GDP में व्रद्धी मुख्यतया औद्योगिक क्षेत्र के पर्याप्त विकास के कारण संभव होती है स्च्छ नीतियों के कारण ध्यान का केंद्र क्रषि से उद्योग की ओर परिवर्तित हुआ है जिससे क्रषि की विकास दर को एक धक्का लगा है क्रषि को धक्के का भिप्रय है, भारत के जनसमूह की जीविका तथा रोजी-रोटी के प्रमुख स्रोत को एक बड़ा धक्का सच कहा जाए तो क्रषि की अवहेलना का अर्थ है निर्धनता की अवहेलना (I) यहाँ विशेष रूप से नोट करने वाली बात यह है कि क्रषि क्षेत्र का धीमा विकास अंततः औद्योगिक क्षेत्र की विकास क्रिया में भी बाधा बन सकता है इसका कारण एह है कि (i) औधोगिक क्षेत्र के लिए क्रषि क्षेत्र कच्चे माल का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, (ii) क्रषि क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र की श्रम आपूर्ति का प्रमुख श्रोत है, और (iii) ट्रैक्टर व थ्रेशर जैसी कई औद्योगिक वस्तुओ के लिए भरी मांग का आधार क्रषि क्षेत्र प्रस्तुत करता है

विकास प्रक्रिया का शेहरी प्रक्रिया का शहरी केन्द्रीकरण: LPG नीतियों के फलस्वरूप विकास प्रक्रिया का शेहरी केन्द्रीकरण हो गया है किसी बहुराष्ट्रीय निगम (MNC) के बारे में आप सोचिये तो आप मुश्किल में इन्हें देश के किसी ग्रामीण क्षेत्रों में देख पाएगे सभी MNC शेहरी क्षेत्रों में ही अपना केंद्र-बिंदु बनाए हुए है, क्योकि उन्हें वहां वंछित आधारित संरचना उपलब्ध है इसके परिणामस्वरूप 'ग्रामीण-शेहरी अंतर' बढ़ा रहा है कोई भी सामाजिक द्वैतवाद अंततः विकास की प्रक्रिया के लिए खतरा बन जाता है

आर्थिक औपनिवेशवाद: ब्रिटिश शासन के दौरान भारत ने राजनीतिक औपनिवेशवाद के लगभग 200 वर्ष व्यतीत किए अब, जबकि MNC भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभुत्व जमा रही है, हमे फिर एक प्रकार जिसमे MNC अपने उत्पादों की बिक्री के लिए भारतीय बाजारों का शोषण कर रही है, और इस प्रक्रिया में घरेलू उत्पादक अपनी कमजोर प्रतियोगी शक्ति के कारण सीमांत हो रहे है अर्थात् पीछे की ओर खिसके जा रहे है

उपभोक्तावाद का फैलाव: नीतियों की फलस्वरूप देश में MNCs के फैसले से उपभोक्तावाद बड़े पैमाने पर फैल रहा है (i) विश्वीय वस्तुओ के अनेक प्रकार के ब्राण्ड बाजार में आने से जनसमूह लालायित होकर फिजूलखर्चबन चुके है, अपनी आमदनी से बाहर होकर भी भारतीय समाज पश्चिमी सभ्यता को अपना रहा है, जिसमे उधर लेकर खर्च किया जा रहा है (i) इससे व्यापारियों तथा विनिर्माताओ के लिए बाजार का आकार विस्तृत हो सकता है, परन्तु निश्चित रूप से यह उपभोक्ताओ के

रूप में ग्रहस्थो की सम्वेदनशीलता को बढ़ावा है वे प्रदर्शन प्रभाव के शिकार बन जाते है जो भौतिकवाद को तो वधवा देता है परन्तु मन की शांति चीन लेता है ?

एकतरफा सम्वृध्दी प्रक्रिया: LPG ने भारतीय अर्थव्यवस्था की सम्वृध्दी प्रक्रिया को तेज किया है, किन्तु यह एक-तरफा है, यह एक सम्मिलित व्रद्धी प्रक्रिया नही है यह अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों का समावेश नही करती है बल्कि यह एक एसी सम्वृध्दी प्रक्रिया है जो केवल सेवा-क्षेत्र पर केन्द्रित है यह सम्वृध्दी प्रक्रिया है जबकि औद्योगिक सम्वृध्दी मंद है, क्रषि में यह ऋणात्मक है यह स्थिति चिंताजनक है कि भारतीय किसान नकद फसलो के उत्पादन पर अधिक ध्यान दे रहा है क्युकी विदेशो में इसकी मांग है फलस्वरूप खाद्दन्न की घरेलु पूर्ति में निरंतर कमी आ रही है खेद है कि हरित क्रांति के बावजूद हमे खाद्दान्न के आयात के लिए विवश होना पड़ता है 2009 के अंत की ओर खाद्द वस्तुओ की तेजी से बढती कीमते इस तथ्य की और ध्यान दिलाती है कि LPG नीतियाँ अर्थव्यवस्था के क्रषि क्षेत्र में विकास प्रक्रिया के प्रति प्रायः बेखबर है

सांस्कृतिक व्हास: वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज का सांस्कृतिक व्हास हो चूका है आर्थिक सम्पन्नता जीवन के अन्य सभी पहलुओ पर हावी हो चूकी है (i) आज प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक रूप से स्वतन्त्र तथा धनी होना चाहता है, वह इस बात को भूलता जा रहा है कि उसकी अपने परिवार अथवा समाज के लिए भी कोई जिम्मेवारी है (i) अपने अरिवर के प्रति वफादारी तथा समाज के लिए निष्ठां जो किसी समय भारतीय संस्कृति का एक अटूट अंग समझा जाता था, भौतिकवाद आ जाने के कारण उसे अब बेकार की बात माना जाता है

5. व्यापार पर आर्थिक नीति में परिवर्तन या उदारीकरण के प्रभाव

कारोबारी माहौल के कारकों और बलों व्यापार पर प्रभाव के लिए बहुत कुछ है। आम प्रभाव और व्यापार और उद्योग में इस तरह के बदलाव के प्रभाव को नीचे की व्याख्या कर रहे हैं:

√ **बढ़ती प्रतिस्पर्धा:**

नई नीति के बाद भारतीय कंपनियों के आंतरिक बाजार से प्रतिस्पर्धा और बहुराष्ट्रीय कंपनियों से प्रतिस्पर्धा का मतलब है जो सभी दौर प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाने और जो कर सकता है जो कंपनियों को ही जीवित है और प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकता है संसाधनों का बड़ी संख्या में कर रहे थे। कई कंपनियों ने प्रतिस्पर्धा का सामना करना है और बाजार में छोड़ना पड़ा नहीं कर सका। उदाहरण के लिए, में एक नेता के वेस्टन कंपनी थी जो टीवी बाजार में अधिक से अधिक 38: हिस्सेदारी के साथ वी बाजार क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सभी दौर प्रतिस्पर्धा के बाजार में भी अपना नियंत्रण खो दिया है। 1995-96 तक कंपनी लगभग टीवी बाजार में अज्ञात बन गया।

√ **अधिक ग्राहकों की मांगः**

नई आर्थिक नीति से पहले बहुत कुछ उद्योगों या उत्पादन इकाइयों थे। एक परिणाम के रूप में उत्पाद की कमी हर क्षेत्र में वहां गया था। क्योंकि बाजार निर्माता-उन्मुख किया गया था इस कमी की है, यानी, उत्पादकों बाजार में प्रमुख व्यक्तियों बन गया। लेकिन नई आर्थिक नीति के बाद कई और अधिक व्यवसायियों उत्पादन लाइन में शामिल हो गए और विभिन्न विदेशी कंपनियों को भी भारत में अपनी उत्पादन इकाइयों की स्थापना की। नतीजतन हर क्षेत्र में उत्पादों की अधिशेष था। अधिशेष के लिए कमी से यह बदलाव खरीदार बाजार के लिए बाजार में एक और पारी, यानी, निर्माता बाजार में लाया। बाजार ग्राहक उन्मुख हो गया और कई नई योजनाएं ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए कंपनियों द्वारा किए गए थे। आजकल उत्पादों के मन में निर्मित रखते हुए ग्राहक की मांग के उत्पादन कर रहे हैं।

√ **तेजी से तकनीकी वातावरण बदलनेः**

इससे पहले या पूर्व नई आर्थिक नीति के लिए केवल एक छोटा सा आंतरिक प्रतिस्पर्धा नहीं थी। लेकिन नई आर्थिक नीति के बाद विश्व स्तर की प्रतियोगिता शुरू कर दिया और कंपनियों को विश्व स्तर की प्रौद्योगिकी को अपनाने की जरूरत है इस वैश्विक प्रतिस्पर्धा खड़ा करने के लिए। अपनाने के लिए और विश्व स्तरीय प्रौद्योगिकी अनुसंधान एवं विकास विभाग में निवेश को लागू करने के लिए बढ़ाने के लिए हैं। कई दवा कंपनियों के 12% से 2% से अनुसंधान और विकास विभाग में अपने निवेश में वृद्धि हुई है और कंपनियों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए एक बड़ी राशि खर्च करना शुरू कर दिया।

√ **परिवर्तन के लिए आवश्यकताः**

1991 व्यावसायिक उद्यमों से पहले समय की एक लंबी अवधि के लिए स्थिर नीतियों का पालन कर सकता है, लेकिन 1991 के बाद व्यावसायिक उद्यमों समय-समय पर उनकी नीतियों और संचालन को संशोधित किया है।

www.ignited.in

√ **मानव संसाधन के विकास के लिए की जरूरत हैः**

1991 भारतीय उद्यमों अपर्याप्त प्रशिक्षित कर्मियों के द्वारा प्रबंधित कर रहे थे पहले। नए बाजार की स्थितियों में उच्च क्षमता कौशल और प्रशिक्षण के साथ लोगों की आवश्यकता होती है। इसलिए भारतीय कंपनियां अपने मानव कौशल विकसित करने की आवश्यकता महसूस की।

√ **बाजार उन्मुखीकरणः**

इससे पहले फर्मों के बाद पहले, यानी, अवधारणा उपज बेचने और उसके बाद बाजार के लिए जाना है, लेकिन अब कंपनियों, बाजार अनुसंधान के आधार पर उत्पादन की योजना बना, यानी, विपणन अवधारणा का अनुसरण की जरूरत है और ग्राहक के लिए चाहते थे।

√ **सार्वजनिक क्षेत्र के लिए बजटीय समर्थन की कमीः**

1991 के पहले सार्वजनिक क्षेत्र के सभी घाटा बजट से विशेष कोष को मंजूरी देने से सरकार की ओर से अच्छा किए जाने के लिए इस्तेमाल किया गया। लेकिन सार्वजनिक क्षेत्रों जीवित है और अपने संसाधनों का उपयोग करके विकसित करने के लिए हैं आज कुशलतापूर्वक अन्यथा इन उद्यमों में विनिवेश का सामना करना पड़ेगा। कुल मिलाकर उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण की नीतियों को भारतीय व्यापार और उद्योग पर सकारात्मक प्रभाव डालता है लाया है। वे और अधिक ग्राहक ध्यान केंद्रित हो गया है और ग्राहकों की संतुष्टि को महत्व देना शुरू कर दिया है।

√ **अस्तित्व की बात में निर्यात करें:**

भारतीय व्यापारी वैश्विक प्रतिस्पर्धा और विदेशी व्यापार बहुत उदार बनाया नई व्यापार नीति का सामना करना पड़ रहा था। एक परिणाम के रूप में अधिक विदेशी मुद्रा में कई भारतीय कंपनियों के निर्यात कारोबार में शामिल हो गए और उस में सफलता का बहुत कुछ मिला है कमाने के लिए। कई कंपनियों ने निर्यात प्रभाग शुरू करने से दोगुने से उनके कारोबार में अधिक वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, रिलायंस कंपनी, वीडियोकॉन, एमआरएफ, सिएट टायर, आदि के निर्यात बाजार में एक बड़ी पकड़ लिया।

6. कृषि के आधुनिकीकरण पर प्रभाव

भारत में आर्थिक उदारीकरण के फलस्वरूप देश में निर्माण एवं सेवा क्षेत्र के विकास पर विषेष बल दिया गया और उसके सकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगोचर होते है। लेकिन अन्य क्षेत्रों के साथ कृषि क्षेत्र में उत्पादन वृद्धि की दृष्टि से आधुनिकीकरण पर विशेष बल दिया जाना था, लेकिन वास्तविकता यह है, कि वास्तव में कृषि की पूर्ण उपेक्षा की गयी है। यही कारण है कि कृषि क्षेत्र में पूँजी निर्माण की दर में गिरावट आयी है। इसके कारण ग्राम विकास और सिंचाई पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, जिससें कृषि और विशेषकर खाद्यान्न उत्पादन की वृद्धि दर में कमी आयी है। यह कृषि विकास की दृष्टि से चिन्ताजनक स्थिति है। कृषि में सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा विकास किया जाना था, लेकिन इसमें कमी आई और उसका ग्राम विकास तथा सिंचाई पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। फिर भी सरकार का एक प्रमुख उद्धेष्य वस्तुओं व सेवाओं के व्यापार में वृद्धि करना है। लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण के फलस्वरूप कृषि निर्यात् की वृद्धि दर में सुधार हुआ। यह वृद्धि दर 1970-71 से वर्ष 1980-81 के बीच 1990-91 कि दौरान घटकर 2.24 प्रतिशत रह गई परन्तु आर्थिक सुधारों बाद 1990-91 से 2008-09 कें दौरान निर्यात की बृद्धि दर नयी नीति का कृषि वस्तुओं के निर्यात पर गहरा प्रभाव पड़ा। जिससे कृषि क्षेत्र में बहुत कुछ सुधार सम्भव हुआ है, लेकिन उसके पश्चात देश में कृषि वस्तुओं का आयात भी काफी मात्रा में हुआ है।

स्वाभाविक रूप से भारत की कृषि निर्यातों में उतार- चढ़ाव की स्थिति बनी रही,लेकिन भारत सरकार ने ऐसी स्थिति में किसानों के हितों की रक्षा करने का भरसक प्रयास किया और उस स्थिति में उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों से समर्थन मूल्य पर बड़ी मात्रा में गेहूँ क्रय करना प्रारंभ कर दिया साथ ही सरकार ने पूर्व की अपेक्षा तीवृता से कृषि विपणन व्यवस्था को सुधारने हेतु बड़ी-बड़ी मण्डियों की शहरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक स्थापना की तथा किसानों को और अधिक सुविधा देने के लिए तहसील स्तर से भी नीचे गाँव तक सरकारी समितियों के माध्यम से कृषि उत्पादों के खरीद हेतु अप्रैल से जून तक अस्थायी केन्द्र स्थापित किये और कृषि उत्पादों को क्रय किया गया।

यह विपणन व्यवस्था इसलिए अपनायी गयी, कि कई किसान अपने कृषि उत्पादों को लेकर शहरी कृषि मण्डियों तक नहीं पहुँच पाते हैं और उन्हें अपना कृषि उत्पादन गाँव के साहूकारों, जमाखोरों और मध्यस्थों को बेचना पड़ता है। जिससें किसानों को हानि उठानी पड़ती है। अतः सरकार ने कृषि विपणन व्यवस्था में सुधार की दृष्टि से मण्डियों का विस्तार किया। वास्तविक रूप में इस योजना के क्रियान्वयन का उद्देश्य वास्तविक किसान को शोषण से मुक्ति दिलाना था और यह सब भारत में अपनायी जाने वाली उदारीकरण की नीतियों के पश्चात अपेक्षित कृषि व्यवस्था को विकास से जोड़नें के लिए आवश्यक था। जिससे वास्तविक रूप में किसानों को कृषि विपणन

व्यवस्था का लाभ दिया जा सके। उनके आर्थिक हितों की रक्षा की जा सके तथा किसानों को उनकी उपज का वास्तविक एवं उचित मूल्य दिलाकर उनकी वास्तविक आय में वृद्धि करना, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। तथा अतिरेक उत्पादन का क्रय कर देश में गरीब परिवारों को सस्ती दर पर अनाज उपलब्ध कराकर दोनो समय भोजन उपलब्ध कराया जा सके।

लेकिन इन सब प्रक्रियाओं में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि ये सब नीतियाँ भारत सरकार की स्वयं की नीतियाँ हैं। जिसके अन्तर्गत सरकार ने किसानों को उत्पादित कृषि उपज को ग्रामीण क्षेत्र में ही विपणन हेतु व्यवस्था उपलब्ध करायी। क्रय किये गये माल को भण्डारग्रह तक पहुँचानें की व्यवस्था भी सरकार के ऊपर निर्भर थी। मात्र किसानों को गाँव के नजदीक स्थापित कृषि विपणन केन्द्र अथवा सहकारी विपणन तक पहुँचाने का कार्य पूर्ण करना था। इसी के अन्तर्गत भारत सरकार ने कृषि विपणन केन्द्रों पर कृषि उपज बेचने वाले किसानों को भुगतान की व्यवस्था भी अत्यन्त सुलभ एवं सरल बनायी। जिसके अन्तर्गत किसानों को भुगतान हेतु अपना बैंक खाता विपणन केन्द्र पर देना पड़ता है तथा उन्हें विक्रय किये गये कृषि उपज की तौल की रसीद किसानों को प्रदान कर दी जाती है तत्पश्चात 10 या 15 दिन में भुगतान की निर्धारित राशि उनके खाते में पहुँच जाती है। इस प्रकार कृषि विपणन व्यवस्था के अन्तर्गत किसान को केन्द्र एव राज्य सरकार द्वारा परिवहन सुविधा का लाभ, सरकारी विक्रय केन्द्र का लाभ, भण्डारण से मुक्ति का लाभ तथा तौल में कटौती का लाभ और घर बैठे भुगतान का लाभ प्राप्त होता है।

इस प्रकार केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा प्राथमिकताओं के आधार पर किसानों के हितों की रक्षा करने हेतु, उनके आय स्तर को ऊँचा उठाने हेतु तथा कृषि क्षेत्र में पूँजी निवेश को प्रेरित करने हेतु, कृषि विपणन व्यवस्था में व्यापक सुधार किया गया है। लेकिन इस प्रक्रिया में आर्थिक उदारीकण की कोई भूमिका दृष्टिगोचर नहीं होती और न ही उदारीकरण का कृषि विपणन व्यवस्था पर कोई धनात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यदि केन्द्र एवं राज्य सरकार यह सब प्रयास नहीं करती, तो हो सकता है कि भूमण्डलीकरण की व्यवस्था में अपनायी गयी नीतियों तथा गैट समझौते के अन्तर्गत भारतीय कृषि एवं कृषि विपणन पूरी तरह पतन के कगार पर पहुँच जाते और विकसित देशों का माल भारत में खुले रूप में बिकता और भारतीय किसान पूरी तरह आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो जाते। अर्थात उदारीकरण की नीति विपणन व्यवस्था की दृष्टि से पूर्णतः प्रतिकूल सिद्ध हुई है।

7. भारत में उदारीकरण की नीति ने कृषि क्षेत्र में भावी सम्भावनायें:-

भारत में उदारीकरण की नीति ने कृषि क्षेत्र में कुछ ऐसी सम्भावनायें उत्पन्न कर दी हैं जो भविष्य के लिए सम्भवतः अधिक घातक सिद्ध होगी। क्योंकि इससे निम्न सम्भावनायें बलवती हुई हैं -

- उपजाऊ भूमि का उद्योंगों के लिए उपयोग
- कृषि उत्पादों की ऊँची कीमत
- बंजर होती भूमि
- कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बढता हस्तक्षेप
- नव प्रवर्तन की प्रवृत्ति में वृद्धि

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया है, कि देश में अपनायी गयी आर्थिक उदारीकरण की नीति एवं कृषि विपणन में सामंजस्य का पूर्णतः अभाव पाया गया है। सामान्यतः उदारीकरण का सम्बन्ध नियमों व प्रतिबन्धों में लचीलेपन की नीति अपनाने या उदारतापूर्ण व्यवहार करने से है। यहाँ तक तो यह नीति उचित होती है। लेकिन जहाँ कृषि विपणन का प्रश्न आता है तो यह नीति पूर्णतः निरर्थक प्रतीत होती है। क्योंकि कृषि विपणन का सम्बन्ध उन सभी विपणन कार्यों एवं सेवाओं के करने से है। जिनके द्वारा वस्तुयें उत्पादक से अन्तिम उपभोक्ता तक पहुँचती है। इसके अन्तर्गत विपणन की सभी सहयोगी क्रियायें एकत्रीकरण, पैकेजिंग, परिवहन, श्रेणीकरण, मानकीकरण, वित्त, जोखिम, प्रबन्ध एवं प्रचार-प्रसार आदि सम्मिलत होते है।

8. निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि उदारीकृत विश्व में भारत के पास कृषि वस्तुओं के निर्यात की पर्याप्त क्षमता एवं संम्भावनायें है। लेकिन इसके लिये यह आवश्यक है कि कृषि में आधार संरचना के निर्माण में बड़ी मात्रा में निवेश किया जाये तथा कृषि वस्तुओं के उत्पादन में दक्षता तथा विविधीकरण को वशेष ध्यान दिया जायें इस तरह स्पष्ट है कि नई आर्थिक नीति के उपरान्त विश्वव्यापीकरण के अन्तर्गत उदारीकरण नीति के काल में देश में कृषि क्षेत्र अपेक्षित रहा और इसके विकास की दर धीमी व उतार- चढ़ाव कुछ वर्षों में वृद्धि दिखायी दी, लेकिन 1996-97 के पश्चात् इसमें भी कमी आ गयी। इसके पीछे कारण कृषि में व्यापार की शर्तो में उदारीकरण की अवधि में कोई सुधार नही हुआ। यह सब इस बात का संकेत है, कि देश

www.ignited.in

की अर्थव्यवस्था में उदारीकरण के पश्चात् भी कृषि एक उपेक्षित एवं पिछड़ा हुआ क्षेत्र है, और इसका कृषि अर्थव्यवस्था पर कोई सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर नही हुआ। जो एक गम्भीर चिंता का विषय है।

उक्त अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि भारत में उदारीकरण की नीति के जहाँ कुछ नकारात्मक प्रभाव होगें, वहीं कुछ सकारात्मक प्रभाव भी होंगे, लेकिन सम्भावनायें यह है कि देश में जिस एक नयी प्रवृत्ति ने जन्म लिया है उसमें हम विकास की ओर अग्रसर भी हुये हैं, जिसमें तकनीकि ज्ञान एवं अनुभव को बढ़ाने के लिए षिक्षा में गुणवत्ता सुधार को प्राथमिकता दी गयी है। जिससे प्रबंध, कुशलता, व्यापार एवं पूँजीगत समस्याओं के समाधान में एक नयी सोच एवं विचारधारा को अपनाया गया है। जो हमें भविष्य में विकास की ओर ले जाने में सहायक सिद्ध होगी और हम वैश्विक प्रतियोगिता में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल होगें।

9. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भारतीय आर्थिक नीति डॉ. पी. डी. माहेश्वरी डॉ. शीलचन्द्र गुप्ता कैलाश पुस्तक सदन-भोपाल

आर्थिक नीति और प्रशासन डॉ. नीलिमा देशमुख कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

आर्थिक विकास एवं नियोजन एस.बी.सिंह एस.चंद एण्ड कम्पनी, रामनगर नई दिल्ली

भारतीय अर्थव्यवस्था डॉ. वी. सी. सिंन्हा साहित्य भवन पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स प्रा.लि

Hand Book of statistics or Indian Economy 2001-09 Deputy Governor Reserve Bank of India

टाइम्स ऑफ़ इण्डिया समाचार पत्र नई दिल्ली

भारत (सन्दर्भ ग्रंथ) निर्देशक प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली

भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्र एवं पुरी हिमालया पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली

म.प्र.आर्थिक सर्वेक्षण 2001-09 संचालक आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय म.प्र. भोपाल

कृषि विकास की समस्याये कृष्ण कुमार उमाहिया मित्तल पब्लिकेशन्स नई दिल्ली

कृषि अर्थशास्त्र डॉ. जय प्रकाश मिश्र साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा

Corresponding Author

Yudhvir Singh*

Department of Economics, Meerut College, Meerut